

SMT. VIJAYALAKSHMI NAVANEETHA KRISHNAN

Smt. Vijayalakhsmi Navaneetha Krishnan former Professor & Head of the Department of Art History Aesthetics & Fine Arts of Madurai, Kamaraj University, Madurai, Tamil Nadu, has been spearheading her life goal of collection, preservation, documentation, research, promotion, propagation and performance of Folk and Tribal Music, Folk Dances, Folk Theatre and Craft since 1979, in India and abroad. Her sustained and committed endeavour has created a great awareness of our folk music and art forms among all the people, irrespective of age, for the present and future generations.

2. Smt. Vijayalakshmi Navaneetha Krishnan, born on June 20, 1946 at Chinna Suraikai Patti, Rajapalayam, Virudhu Nagar District, Tamil Nadu in an agricultural family and brought up in a folk environment was naturally talented in folk music, folk dances, folk deities rituals, folk drama and folk drawing (Kolam) owing a commendable record with several awards and prizes as her scholastic achievements. She sprang up as the State First Rank holder in her graduation and won G.U. Pope Gold medal and Bavanandam Academy award Gift of acting, writing and Painting, showered on her Professor Manornaniam Sundarampillai Award for Drama and Jaycess Award for Rangoli Drawing. Starting her professional career as Assistant Professor in 1967, in her 39 long years of Teaching Research experience in Literature Folk music, Folk Ritual, Folk Theatre and Folk Arts as a promising academic, she has participated in more than 60 National & Inter National conferences, seminars, workshops and presented research papers on Folk music and arts. She has held prestigious positions in several academic body as well as art and cultural committees of Central & State Government and served sincerely. Her thesis on the Hymns of Tamil Vaishnava saints with special reference to the Religious Dance 'Araiyar Sevai' and St. Andal's Bridal Mysticism was highly commended as the best research work in the research world. She has authored 16 books, both as research on folk music and dances, theater and Literature and as creative writings like novel, drama, short stories and poems.

3. As the output of her wideranging field work, along with her husband Dr. M. Navaneetha Krishnan, Professor of Folk Arts, who is well known as a Folk researcher as well as an expert in Folk dances, Smt. Vijayalakshmi Navaneetha Krishnan has brought to light, here detailed exploration of the Folk music and arts field, in her collection of folk songs in 5,000 Audio cassettes, consisting of 10,000 rare folk songs, Folk visual arts in 200 Video Cassettes, 100 rare scripts of folk lore, and a number of photographs, documentation of folk events, various folk songs, musical operas, folk theatre, folk rituals, and festivals and other folk arts and culture, documented by her as audio, video, scripts and stills for Research purpose are the real treasure of the Indian Culture.

4. By rejuvenating and propagating the folk songs and dances, Smt. Vijayalakshmi Navaneetha Krishnan has staged more than three thousand performances among the public, especially among the youngsters, made them aware of the native soil's culture and involve themselves in folk music and folk arts field with enthusiasm and spirit. To prop up folk music she has sung and released 13 Audio Albums of folk musical song with the soil's flavor, which are public knowledge and very popular in midst of the youth. Her spread of folk songs through Radio and Television has earned an honour and recognition for the folk music in the music world, because of which even a single music ensemble does not miss singing her folk songs in its concerts. Her experimentations on applying scientific themes and social reformation in folk music and arts also have won name and fame, significantly the documentary film 'Pachai Koil' on water management won Indo - Pacific Award and feature programme about environmental pollution 'Markali Pookkal' won the AIR award as the best feature programme.

5. Smt. Vijayalakshmi Navaneetha Krishnan has travelled not only to remote and secluded villages of Tamil Nadu for collecting and propagating folk music and art but also to foreign countries. A number of lecture cum demonstration of Folk music and arts were presented by her to enlighten the foreigners on Indian Folk Music and Arts. The Heads of states, Dignitaries and reputed journals praised her valuable contributions to folk music field and conferred on her including Kalaimamani Award of Tamil Nadu Government, outstanding young person of India award, by Indian Jaycees, Sthree Ratna Award and MAC Award.

6. Though Smt. Vijayalakshmi Navaneetha Krishnan has been honoured with Awards and Titles, with all simplicity and sincerity still she is pursuing her ideal with effort and elan progressing towards her achievement of aims, to form a folk archive; to construct a model folk village like a vast museum exhibiting various folk materials, folk religious elements, folk deities rituals and folk art sources; and codify the movements of folk dances and encode the folk musical songs to bring out folk principles and grammar and folk encyclopedia and a comparative research study of Tamil folk music and arts with other states folk arts and music of India with special reference to Kerala, Karnataka and Andhra Pradesh.



श्रीमती विजयलक्ष्मी नवनीत कृष्णन

आर्ट हिस्ट्री एस्थेटिक्स एण्ड फाइन आर्ट्स ऑफ मदुरई, कामराज यूनिवर्सिटी, मदुरई, तमिलनाडु की भूतपूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, श्रीमती विजयलक्ष्मी नवनीत कृष्णन ने 1979 से अपना जीवन भारत तथा विदेशों में लोक एवं आदिवासी संगीत, लोक नृत्य, लोक रंगमंच और दस्तकारी के संग्रहण, परिरक्षण, प्रलेखन, अनुसंधान, संवर्धन, प्रचार-प्रसार तथा प्रदर्शन में लगा दिया है। आपके सतत एवं प्रतिबद्ध प्रयास से वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के हर उम्र के लोगों में लोक संगीत तथा कला के स्वरुपों के बारे में काफी जागरूकता आई है।

2. आपका जन्म 20 जून, 1946 को चिन्ना सुरेकई पट्टी, राजपलायम, विरुधु नगर जिला, तमिलनाडु में एक किसान परिवार में हुआ तथा आपका पालन-पोषण लोक कलाओं के वातावरण में हुआ जिससे आपके अंदर लोक संगीत, लोक नृत्यों, लोक दैवीय रीति-रिवाजों, लोक नाटक और लोक ड्राइंग (कोलम) के प्रति स्वाभाविक रूप से प्रतिभा पैदा हो गई। आपकी विद्वतापूर्ण उपलब्धियों का रिकॉर्ड बहुत अच्छा है जिसके लिए आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। ग्रेज्युएशन में आप पूरे राज्य में प्रथम स्थान पर रहीं तथा आपने जी.यू. पोप गोल्ड मेडल तथा अभिनय, लेखन और चित्रकारी में बवनंदम एकेडमी अवार्ड गिफ्ट जीता तथा आपको नाटक के लिए प्रोफेसर मनोरननियम सुन्दरमपिल्लई पुरस्कार तथा रंगोली ड्राइंग के लिए जेसेस पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 1967 में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में अपना प्रोफेशनल कॅरिअर शुरू करके साहित्य, लोक संगीत, फॉक रिचुअल, लोक रंगमंच और लोक कलाओं में आपको 39 वर्ष का शिक्षण अनुसंधान का अनुभव है। आपने 60 से अधिक राष्ट्रीय और अन्तर-राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों, कार्यशालाओं में भाग लिया तथा लोक संगीत और कलाओं पर शोध-पत्र प्रस्तुत किए। आप अनेक शैक्षणिक निकायों तथा केन्द्र और राज्य सरकार की कला एवं सांस्कृतिक समितियों में प्रतिष्ठित पदों पर रही हैं। धार्मिक नृत्य 'अरैयर सेवई' तथा सेंट अंडाल के दुल्हन रहस्यवाद के विशेष संदर्भ में तमिल वैष्णव संतों के भजनों के बारे में उनके थेसिस की अनुसंधान जगत में सर्वश्रेष्ट अनुसंधान कार्य के रूप में बड़ी सराहना की गई। आपने लोक संगीत और नृत्यों, थियेटर तथा साहित्य पर अनुसंधान और उपन्यास, नाटक, लघु कथाओं एवं कविताओं जैसी रचनात्मक लेखनियों के रूप में 17 पुस्तकें लिखी हैं।

3. अपने पति डॉ. एम. नवनीत कृष्णन, लोक कला के प्रोफेसर, जो लोक अनुसंधानकर्ता तथा लोक नृत्यों में विशेषज्ञ के रूप में सुविख्यात हैं, के साथ मिलकर अपने व्यापक क्षेत्र कार्य के परिणाम के रूप में, आपने 10000 दुर्लभ लोक गीतों वाले 5000 ऑडियो कैसेट्स में लोक गीतों, 200 विडियो कैसेट्स में लोक दृश्य कलाओं, लोकगीत के 100 दुर्लभ स्क्रिप्ट के अपने संग्रह में लोक संगीत तथा कला क्षेत्र के व्यापक अन्वेषण को उजागर किया है एवं कई फोटोग्राफ्स, लोक घटनाओं, विभिन्न लोक गीतों, संगीत विधाओं, लोक थियेटर, लोक रीतियों तथा त्यौहारों और लोक कलाओं एवं संस्कृति, जो आपके द्वारा अनुसंधान प्रयोजन के लिए ऑडियो, विडियो, स्क्रिप्ट्स और स्टील्स के रूप में प्रलेखित किए गए हैं, का प्रलेखन भारतीय संस्कृति की वास्तविक धरोहर है।

4. लोक संगीतों और नृत्यों में नई जान फूंककर और उनका प्रसार करके आपने जनता, विशेषकर युवकों के बीच 3000 से अधिक परफॉर्मेंस का मंचन किया है, उन्हें अपनी मिट्टी की संस्कृति से अवगत कराया है और लोक संगीत तथा लोक कला क्षेत्र में उन्हें उत्साह एवं उमंग से स्वयं भाग लेने के लिए प्रेरित किया है। लोक संगीत को बढ़ावा देने के लिए आपने मिट्टी के सुगंध से ओत-प्रोत लोक संगीत गाए हैं और इनके 13 ऑडियो एल्बम रिलीज किए हैं जो लोगों की जानकारी में है और युवकों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से लोकगीतों का प्रसार करने के आपके प्रयास को संगीत की दुनिया में सम्मान एवं पहचान मिली है जिसके कारण एक भी संगीत टोली अपने कंसर्ट में आपकी लोकगीतों को गाए बिना नहीं रहती है। लोक संगीत और कलाओं में वैज्ञानिक विषयों तथा सामाजिक सुधार को शामिल करने से संबंधित आपके प्रयोग को भी प्रसिद्धि मिली है, विशेषकर, जल प्रबंधन के बारे में वृत्तचित्र 'पचाई कोइल' को इंडो-पेसोफिक अवार्ड मिला तथा पर्यावरण प्रदूषण के बारे में फीचर कार्यक्रम 'मरकली उकल' को सर्वश्रेष्ठ फीचर कार्यक्रम के रूप में आकाशवाणी अवार्ड मिला।

5. लोक संगीत और कला को संग्रह करने और उसका प्रसार करने के लिए आपने न केवल तमिलनाडु के दूरस्थ एवं अलग-थलग पड़े गांवों बल्कि विदेशों की भी यात्रा की है। आपने भारतीय लोक संगीत और कलाओं के बारे में विदेशियों को अवगत कराने के लिए लोक संगीत एवं कलाओं के बारे में कई व्याख्यान-सह-प्रदर्शनी प्रस्तुत की। हेड ऑफ स्टेट्स, गणमान्य व्यक्तियों तथा प्रसिद्ध पत्रकारों ने लोक संगीत के क्षेत्र में आपके महत्वपूर्ण योगदानों की प्रशंसा की तथा आपको तमिलनाडु सरकार का कलाई ममानी अवार्ड, इंडियन जाईसीज द्वारा आउटस्टैंडिंग यंग पर्सन ऑफ इंडिया अवार्ड, श्री रतन अवार्ड और एम ए सी अवार्ड दिया गया।

6. यद्यपि आपको पुरस्कारों और उपाधियों से सम्मानित किया गया है, तथापि, अति सरलता एवं निष्ठा से आप अभी भी लोक संग्रह बनाने; विभिन्न लोक सामग्री, लोक धार्मिक तत्वों, लोक देवियो संबंधी रीतियों तथा लोक कला स्रोतों को प्रदर्शित करते हुए व्यापक संग्रहालय जैसा एक मॉडल लोक ग्राम का निर्माण करने; तथा लोक सिद्धांतों एवं व्याकरण और लोक इन्साइक्लोपीडिया को प्रकाशित करने के लिए लोक नृत्यों के आंदोलनों को संहिताबद्ध करने तथा लोक गीत-संगीत को इनकोड करने और तमिलनाडु लोक संगीत एवं कलाओं का विशेषकर, केरल, कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश के विशेष संदर्भ में भारत के अन्य राज्यों की लोक कलाओं और संगीत के साथ तुलनात्मक अनुसंधान अध्ययन के अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढ़ते हुए, श्रम और ऊर्जा के साथ अपने आदर्श का अनुसरण कर रही हैं।